विश्वशांति में नारी शिक्षा का योगदान

(Vishvashaanti Mein Naari Shiksha Ka Yogadaan)

विनिता कुमारी

(VINITA KUMARI)

पीएच.डी. शोधार्थी (शिक्षाशास्त्र)

संत जेवियर्स कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन (स्वायत्त)

आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय पटना, से संबद्ध

सार

नारी ही सम्पूर्ण सृष्टी की निर्माणकर्ता है अतः नारी को शिक्षित होना नितान्त आवश्यक है | नारी शिक्षा का अर्थ है नारी की शिक्षा | शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य स्वयं को पशु से अलग कर पता है | शिक्षा के द्वारा हम मनुष्य की अन्तर्निहित शक्तियों को उभारने का कार्य करते हैं, परन्तु जब बात नारी शिक्षा की आती है तो हम स्त्री को हर एक कौशाल में पुरुषों से कहीं ज्यादा प्रवीण मानते हैं | स्त्री शिक्षा के कारण कई तरह के समाज में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं , जिसमे विश्वशांति एक महत्वपूर्ण भाग है| विश्वशांति से हमारा तात्पर्य विश्व में होने वाली सभी गतिविधियों को सकारात्मक रूप से लागू करना है| मुख्य रूप से विश्व के जितने भी संसाधन हैं | वे कहीं न कहीं सीमित रूप में हैं | इन संसाधनों पर अपने अधिकार को लेकर लोगों में बहुत मतभेद होती है | और तब हमारा विश्वशांति भंग होना शुरू हो जाता है| नारी को समाज शिक्षिका के रूप में माना गया है| वह अपने बच्चों को जिन गुणों से परिपूर्ण करती है उसका सीधा प्रभाव हमारे समाज पर पड़ता है | इस आधार पर हम कह सकते हैं की यदि नारी शिक्षित होगी तो अपने बच्चों, परिवार, तथा हर क्षेत्र को लिए प्रेरित करेंगी जो समाज-निर्माण,सामाजिक-शांति, तथा विश्व- शांति में अपना प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों में योगदान देगी | एक सुसंस्कृत एवं सुशिक्षित माता ही अपने बच्चों में अच्छे गुणों का निर्माण का सकती है |

मुख्य बिंदु : नारी शिक्षा, विश्वशांति, सकारात्मक परिवर्तन, मतभेद, समाज, संसाधन

प्रस्तावना :

शिक्षा की देवी सरस्वती हैं, जो स्वयं एक स्त्री हैं | वे शांत स्वभाव श्वेत वस्त्र धारण किये हुए, कमल के पुष्प पर आसन, हाथ में पुस्तक एवं वीणा धारण किये हुए हैं | इससे यह स्पस्ट होता है की ये देवी शिक्षा और शांति को प्रदान करने वाली हैं | गहन चिंतन एवं मनन करने से हमें यह ज्ञात होता है की शिक्षा एवं शांति में बहुत गहरा सम्बन्ध है | हम शिक्षा के बगैर विकाश की कल्पना नहीं कर सकते हैं और विकाश को कायम एवं प्रगतिशील बनाने के लिए हमें समाजशांति एवं विश्वशांति की ओर गंभीरता से कार्य करना होगा अन्यथा आज तो ऐसे ऐसे मिसाइल एवं परमाणु का निर्माण किया जा रहा है , जो सेकेंडो में सम्पूर्ण विश्व को ख़त्म कर सकती है |

नारी में सहनशक्ति, क्षमता, योग्यता, कौशल, आत्मसंयम एवं प्रतिबद्धता होती है, जो पुरुषों में नहीं पायी जाती है | नारी को यदि सुशिक्षित किया जाये तो वह हर तरह की बाधाओं को दूर करके विश्व में अमन एवं शांति कायम करेगी |

कहा जाता है कि यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं , परन्तु जब आप एक स्त्री को शिक्षित करते हैं तो हमारा परिवार,समाज, राष्ट्र एवं विश्व शिक्षित होता है |

नारी शिक्षा के बिना हम शांति की कल्पना शायद ही कर पाए | नारी एक परिवार को बनती है, वह शांति बनाए रखने के लिए कई प्रकार के कष्टों को झेलकर, लोगों की आवश्यकताओ की पूर्ति करती है | वह परिवार-समाज को मिलकर शांत समाज का निर्माण करती है | तब जाकर यह शांत संमाज एक शांत राष्ट्र और फिर शांत विश्व के निर्माण में अपना योगदान देता है |

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता "

अर्थात जहां नारियों की पूजा होती है तथा उनका आदर होता है उन्हें विकसित होने का अवसर दिया जाता है वहां देवताओं का वास होता है| प्राचीन काल से ही नारी शिक्षा की बात की गई है तथा सबको शिक्षा का समान अधिकार दिया गया है |

नारी शिक्षा के विभिन्न परिपेक्ष

प्राचीन काल से ही नारी शिक्षा ओ अधिक महत्त्व दिया गया है | प्राचीन काल में सबको शिक्षा का समान अधिकार दिया गया है |ऋग्वेद के अनुसार गार्गी मैत्रेई घोषा शंकुतला उर्वशी अपाला विदुषी महिलाएं थी | बौद्ध काल में भी कई विकट परिस्थितियों के बावजूद संघमित्रा जैसी विदुषी का नाम नारी शिक्षा को भलीभांति परिभाषित करता है | ब्रिटिश युग में नारी शिक्षा के लिए सबसे पहले उद्घोषणा पत्र में कहा गया है कि इनको भी शिक्षा का बराबरी अधिकार है| 1882 में स्त्रियों के लिए जो विद्यालय खोले गए थे, उनकी संख्या लगभग 2,697 थी, जिसमें लगभग 1, 27,066 छात्र–छात्राएं शिक्षा प्राप्त कर रहे थे | इसके बाद भी कई प्रयास किए गए जिससे नारी शिक्षा को और आगे बढ़ाया जा सके |स्वतंत्रता के पश्चात नारी शिक्षा के विकास हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किए गए | जिसके फलस्वरूप लोगों के नजरिए में बदलाव आने लगा | महिलओं को पुरुषों के बराबर हक़ मिलना शुरू हो गया | नारी उत्थान में श्रीमती जयंती पटनायक की भूमिका को सराहनीय माना गया है | अनुच्छेद 15 (1), 16 (1), 16(2) में नागरिकों से लिंग के आधार पर भेदभाव को खत्म करने की बात कही गई है |

राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम (1990)

सरकार ने बालक बालिकाओं की शिक्षा एवं नामांकन में वृद्धि के लिए कई तरह की योजनाओं को कार्यान्वित करने का प्रयास किया है इसके बावजूद कहीं ना कहीं कुछ कमी दिख रही है जिसके कारण शत–प्रतिशत परिणाम नहीं प्राप्त किया जा सका है 1990 में राष्ट्रीय महिला आयोग अधिनियम पारित किया गया इसमें मुख्य रूप से महिलाओं के अधिकार सुरक्षा आर्थिक विकास एवं सामाजिक विकास की बात की गई है शिक्षा के क्षेत्र में पिछ अर्थी चली जाती हैं चाहे वह सामाजिक क्षेत्रों आर्थिक स्वास्थ्य राजनीतिक या परिवारिक क्षेत्र क्यों ना हो इसलिए शिक्षा स्त्री जाति का तृतीय नेत्र है क्योंकि इससे उस में दक्षता कौशल ज्ञान क्षमता एवं निर्णय की शक्ति का विकास होता है वर्ल्ड बैंक रिपोर्ट शिक्षित महिलाएं उत्पाद आए एवं आर्थिक विकास के साथ–साथ स्वस्थ स्वस्थ जनसंख्या के निर्माण में सहायक है

वैदिक काल - वेदों में स्त्री जाति को पुरुष जाति का पूरक माना गया है पत्नी को अर्धांगिनी से संबोधित किया गया है उसे पुरुष के ज्ञान बल जीवन क्रियाओं का साझीदार माना जाता है वैदिक काल में नारी शिक्षा को पर्याप्त महत्व दिया जाता है महिलाओं को विद्याध्ययन का पूर्ण अधिकार था |

बौद्ध काल में मध्यकाल - प्रारंभिक शिक्षा में नारी शिक्षा लगभग उपेक्षित रही थी परंतु बाद में महात्मा बुद्ध ने स्त्रियों को भी बचने के रूप में मठों में प्रवेश की अनुमति प्रदान कर दी थी उनकी शिक्षा के लिए कुछ विशिष्ट रूप से निर्धारित भिक्षुक होते थे बौद्ध काल में शिक्षा से वंचित वर्ग की महिलाओं के लिए हुआ करता था मुस्लिम काल में मुस्लिम काल में महिलाओं के बीच पर्दा प्रथा का प्रचलन होने के कारण नारी शिक्षा का विकास काफी कम हो सका था कि लड़कियों को महलों में जाकर प्रारंभिक शिक्षा ग्रहण करती थी उनकी उच्च शिक्षा की व्यवस्था उनके घर पर ही किया जाता था मुस्लिम काल में परिवार के व्यक्तिगत तथा आर्थिक क्षमता पर ही नारी शिक्षा भर्ती मुस्लिम काल में नारी शिक्षा की उपेक्षा की गई थी नारी को सिर्फ विलास का साधन माना जाता था

ब्रिटिश काल में - ब्रिटिश कालीन शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों में नारी शिक्षा में कई विशेष परिवर्तन नहीं हुए नारी शिक्षा उपेक्षणीय बनी रही परंतु बाद के वर्षों में नारी शिक्षा के लिए सराहनीय प्रयास किए गए महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए कई कन्या विद्यालय भी खोले गए |

स्वतंत्रता के पश्चात:-स्वतंत्रता के पश्चात नारी शिक्षा के लिए कई अहम फैसले किए गए स्त्रियों को पुरुषों के बराबर समझा जाने का प्रयास किया गया उनके समाज समान अधिकार के लिए कई तरह के प्रभावी समिति का गठन किया गया जयंती पटनायक किस क्षेत्र में अपने सत प्रतिशत योगदान दिए थे वर्तमान में विद्यालयों की कमी नहीं है इसके बावजूद भी कई बालिकाएँ विद्यालय नहीं जाती हैं |1978-79 के आंकड़े दर्शाते हैं कि 6 से 14 वर्ष के लगभग 66 % लड़कियां विद्यालय कभी नहीं गई थी |

राष्ट्रीय समिति का गठन नारी शिक्षा के लिए – शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार द्वारा महिलाओं की शिक्षा हेतु गठित राष्ट्रीय समिति ने 1974 में अपनी तेरहवीं बैठक की मुख्य सिफारिशें -

केंद्र एवं राज्य के द्वारा स्त्री शिक्षा के लिए विशेष धनराशि प्रदान करना |
लड़कियों के नामांकन में वृद्धि हेतु विशेष सुविधाएं प्रदान करना|
महिलाओं को शिक्षण प्रशिक्षण कंडेंस कोर्स द्वारा देना |
स्थानीय महिलाओं को शिक्षण के रूप में नियुक्त करना|
ऐसी महिला जो बीच में शिक्षा छोड़ दिया है उन्हें अनौपचारिक रूप से शिक्षा प्रदान करना|
महिला शिक्षकों के लिए शहरों एवं नगरों में स्टाफ क्वार्टर की व्यवस्था करना |

राष्ट्रीय महिला आयोग – सन 1990 में पारित किया गया इसमें एक अध्यक्ष एक सचिव एवं पांच पूर्व कालिक सदस्य थे| यह आयोग 31 जनवरी 1992 से प्रभावी हुआ | इस आयोग के ने महिलाओं को कानूनी सुरक्षा प्रदान करने की बात की है महिलाओं की शिकायतों एवं समस्याओं पर शीघ्रता से कार्य करना महिलाओं को आर्थिक एवं सामाजिक रुप से सुदृढ़ बनाना| महिलाओं के उत्थान के लिए प्रमुख कार्यक्रम चलाए जाते थे जिनमें से प्रमुख है –

1.स्वयंसिद्ध - महिलाओं को अल्प ऋण प्रदान कराना|
2.रोजगार एवं प्रशिक्षण के लिए सहायता देने के कार्यक्रम |
3.स्वावलंबन कार्यक्रम |
4. स्वाधार: कठिन परिस्थितियों में पढ़ने वाली महिलाओं के लिए योजना|

5. महिला शिक्षा के लिए कंडेंस्ड का पाठ्यक्रम |

एन. सी. एफ. (2005) :- इसके अनुसार नारी शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिए प्राथमिक स्तर पर विविध कार्यक्रम चलाये गए जैसे – सर्व शिक्षा अभियान , शिक्षा कर्मी कार्यक्रम, कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय ,जनशिक्षण संस्थान इत्यादि |

शिक्षित नारी एवं विश्वशांति का संबंध

किसी भी मनुष्य की प्रथम शिक्षिका उसकी माता को माना गया है ऐसे में एक शिक्षित माता अपने बच्चे के सर्वांगीण विकास करके उसे सृजनात्मक कार्यों के लिए प्रेरित करेगी ना कि विध्वंस कार्य के लिए।

आज जिस तरह से बहुत कम उम्र के बच्चे आतंकवाद एवं भ्रष्ट समाज के लिए निर्माण कर रहे हैं यदि कोई यह रोक सकता है, तो वह उसकी माता है जो सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत हो।

हर दिन लूटपाट बलात्कार छीन झपट एवं एसिड अटैक की बात सुनने में आ रही है यदि लोगों को अपने बच्चे से ही नैतिक मूल्यों का ज्ञान माता के द्वारा दिया जाए तो हम उसे शीघ्रता से निकल सकते हैं।

एक महिला के अंदर या क्षमता होती है कि वह अपनी संस्कृति को अपने आने वाले पीढ़ी को दे सके एवं रक्षित कर सके कहीं ना कहीं और संस्कृति हमारे विकास के साथ–साथ शांति कायम रखने में मदद करती है|

शोध की सार्थकता

इस शोध का तात्पर्य है की हम नारी शिक्षा की तरफ अधिक से अधिक ध्यान दे एवं दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित कर सके | यदि लड़का को पढ़ना फर्ज है तो बेटी को पढ़ने में क्या हर्ज है? हमे नारी शिक्षा के लिए सकारात्मक भाव से वचनबद्ध होना होगा |अभिभावक अपनी बेटियों को शिक्षा के लिए घर से बाहर भेजने में कतराते हैं जब बात उच्चतर- शिक्षा की आती है तब वहाँ तक बहुत कम महिलायें पहुंच पाती है ,क्योंकि हमारा समाज लड़कियों की शिक्षा से ज्यादा महत्व उसकी शादी को देता हैं | भी पैसे खर्च कर दे यहां तक कि जब भी हो तो वहां पर लड़कियों की शादी के बाद माता–पिता अपने करते हैं आज हमें को इस बात से अवगत कराना होगा कि यह पूर्ण रूप से प्रभावित होता है इसका प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव दिखता है स्त्री ही उत्पन्न कर सकती है जहां पर लोग एक दूसरे की भावनाओं को समझें उन्हें जाने अपने पर संयम रखें शांति के मार्ग को अपनाएं अहिंसा के रास्ते पर चलें और दूसरे को सम्मान देना रिवर्स माध्यम है जो संस्कृति को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित करती है|

विधि :- गुणात्मक विधि

निष्कर्ष : इसमें कोई संदेह नहीं है कि सरकार ने समय–समय पर नारी शिक्षा के लिए अपने प्रयासों को लगातार जारी रखा हैं | इसके बावजूद इनमें कई कमियां देखने को मिली हैं | ऐसा भी नहीं कह सकते हैं कि नारी शिक्षा का मुद्दा बिल्कुल ही कार्यान्वित नहीं हुआ है| हम आज समाज में कई तरह के परिवर्तन भी देख सकते हैं | पूर्व में नारी को सिर्फ घर की शोभा एवं साज सज्जा की एक वस्तु समझ कर उनको घर की चारदीवारी तक ही सीमित रखा जाता था| परंतु आज की स्त्री आसमान में जेट पायलट को भी उड़ाने की क्षमता रखती हैं | कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स तथा इंदिरा नुई प्रसिद्ध महिलाएं हैं | जो अपने क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाते हुए अपनी सफलता का परचम लहरा रही हैं |आज हमारे बीच के विश्वशान्ति के प्रचार–प्रसार की जीती जगती प्रमाण के रूप में मलाल युसुफजई हैं | जिन्होनें अपनी शिक्षा के दम पर बडे-बड़ों को परास्त करके विश्व में अमन–चैन के लिए स्वयं को समर्पित कर दिया|हमें सिर्फ कुछ उदाहरण से संतुष्ट होने से काम नहीं चलेगा| हमारी यह कोशिश

होनी चाहिए किविश्व की हर एक नारी सुशिक्षित हो और वह एक सुशिक्षित समाज के निर्माण के लिए स्वयं को प्रतिबद्ध करें| तभी हमारा विश्वशांति का सपना पूरा हो पायेगा |

सन्दर्भ सूची:-

1. अग्रवाल जे. सी.,(2009) भारत में नारी शिक्षा प्रभात प्रकासन |
2. हथर ई. डब्लू.(1988), नारी शिक्षा साऊथ एशिया बुक प्रकासन |
3. सिंह जे. पी.(2016), आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन , पी एच लर्निंग, प्रकासन|

वेबसाइट :

4. एन. सी.एफ. (2005) , https://hi.m.wikibook.org. reviewed on 15.03.2018
5. रास्ट्रीय महिला आयोग, https://hi.m.wikipedia.org. reviewed on 14.03.2018